SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

विकसित भारत में मानवीय मूल्यों का महत्व और व्यक्तित्व विकास में उनकी भूमिका

डॉ० उपासना शर्मा, सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, स्वर्गीय श्री मदन मोहन उपाध्याय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, द्वाराहाट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

ई मेल - drupasna.eco@gmail.com

शोध सारांश

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के युग में सृजनशीलता, आत्मज्ञान, कल्पना, विश्वास, प्रेम एवं सहानुभूति जैसे भावनात्मक गुणों का निरन्तर ह्रास हुआ है। व्यापक उपभोक्तावादी संस्कृति तथा भोग विलास से पोषित भौतिकतावादी युग में धन-अर्जन, सत्ता तथा प्रसिद्धि की लालसा ने परम सुखवादी जीवनयापन को प्रोत्साहित किया है। इसका परिणाम मानवीय मूल्यों के विघटन के रूप में सामने आ रहा है। भारत में आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में मानवीय मूल्यों का प्रमुख स्थान रहा है। मूल्य समाज में व्यक्ति के व्यवहार को नियन्त्रित करते हैं साथ ही सही मार्ग की ओर निर्देशित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक ओर मानवीय मूल्य मनुष्यों के मानसिक तनावों व संघर्षों को सुलझाकर आन्तरिक संगति व सम्बद्धता उत्पन्न करते हैं दूसरी ओर आदर्श आयाम की ओर, वैयक्तिक व सामाजिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं। महान समाज सुधारकों, नेताओं, प्रशासकों आदि के विचारों एवं उपलब्धियों से मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला जा सकता है। वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि मूल्यों का निरन्तर विघटन हो रहा है। अधिकतर व्यक्तियों में सकारात्मक के स्थान पर नकारात्मक सोच निर्मित हो रही है। देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार, समाज एवं शिक्षण संस्थानों से मूल्यों को ग्रहण करें जिससे वह एक आदर्श नागरिक बन सके। मूल्य आधारित शिक्षा पर बल देकर अपने देश के गौरवपूर्ण अतीत के बारे में बताया जा सकता है। मूल्य आधारित वातावरण से तैयार भावी नागरिक विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान देकर विकसित देशों की श्रेणी में पहुँचाने में सक्षम होंगें।

कुंजी शब्द - विश्वव्यापीकरण, मानवीय मूल्य, मानवतावाद, विकसित भारत

 © Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

विकसित भारत में मानवीय मूल्यों का महत्व और व्यक्तित्व विकास में उनकी भूमिका

विश्व में भारत का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध अतीत रहा है। उदारीकरण, निजीकरण, वैश्वीकरण के पश्चात भारत में सृजनशीलता, आत्मज्ञान, कल्पना, विश्वास, प्रेम एवं सहानुभूति जैसे भावनात्मक गुणों का निरन्तर ह्रास हो रहा है। व्यापक उपभोक्तावादी संस्कृति तथा भोग विलास से पोषित भौतिकतावादी युग में धन-अर्जन सत्ता तथा प्रसिद्धि की लालसा ने परम सुखवादी जीवनयापन को प्रोत्साहन दिया है। इसका परिणाम मानवीय मूल्यों के विघटन के रूप में सामने आ रहा है साथ ही तर्क व निर्णय जैसे गुणों में व्यक्तिगत स्तर पर वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति सामाजिक परिवेश से दूर होकर एक नवीन आभासीय दुनिया में कदम रख रहे हैं। इसीलिए वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों को विकसित करने की अति आवश्यकता है।

मानवीय मूल्यों को समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया जाता है। इन्हें मानव समाज के माध्यम से सीखता है। निर्णयों में मानवीय मूल्य सहायक भी हो सकते हैं और उनकी अनदेखी भी की जा सकती है परन्तु महत्वपूर्ण निर्णयों में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में मानवीय मूल्यों का प्रमुख स्थान होता है। मूल्य व्यक्ति के साथ समाज के व्यवहार को भी नियन्त्रित करते हैं साथ ही सही मार्ग दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक ओर मानवीय मूल्य मनुष्य को मानसिक तनावों व संघर्षों को सुलझाकर आन्तरिक संगति व सम्बद्धता उत्पन्न करते हैं दूसरी ओर आदर्श आयाम की ओर, वैयक्तिक व सामाजिक जीवन की ओर उन्नति को निर्देशित करते हैं। मानवीय मूल्य से तात्पर्य किसी मौलिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उसे गुण से भी है जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य अथवा लक्ष्य की पूर्ति होती है। मूल्यों का व्यक्ति के आचरण, व्यक्तित्व तथा कार्यों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है।

मानवीय मूल्यों की खोज के प्रयास- 1951 के अमेरिकी शैक्षिक नीति आयोग ने पब्लिक स्कूलों के लिए कुछ मानवीय मूल्य निर्धारित किए थे।[1] ये निम्नलिखित हैं-

- मानवीय व्यक्तित्व के लिए आदर
- व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी
- संस्थाओं का व्यक्ति के अधीन होना
- सामान्य सहमति
- सत्यनिष्ठा

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

· समानता

· भ्रातत्व

· आनन्द की खोज

· आध्यात्मिक संवर्धन

· श्रेष्ठता के लिए आदर

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986[2] में उल्लेख किया गया है कि हमारा समाज सांस्कृतिक दृष्टि से बहुलवादी है तथा शिक्षा से ऐसे सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों का विकास होना चाहिए जो लोगों की एकता व उनके समाकलन की ओर अभिमुख हो। इस मूल्य शिक्षा से धार्मिक उन्माद, हिंसा, अन्धविश्वास, भाग्यवाद व रूढिवादिता समाप्त होगी। शिक्षा नीति के अनुच्छेद 8.4 में शिक्षा के सामाजिक व नैतिक मूल्यों के विकास के लिए एक सशक्त साधन बनाने के लिए कहा गया है।

रेड्डी वी० एन० ने अपनी पुस्तक **"मैन एजुकेशन एण्ड वैल्यूज"** में भौतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य और मनोवैज्ञानिक मूल्यों का उल्लेख किया है।[3]

मूल्यों की विशेषताएं- मूल्य अमूर्त, अधिगामी, द्विपहलू (विषय वस्तु एवं तीव्रता), कुछ अंश तक आन्तरिक भाव लिए हुए आदि होते हैं। क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में मूल्य के महत्व में अन्तर पाया जाता है।

मूल्यों के प्रकार-

i) दृष्टिकोण के आधार पर- सकारात्मक मूल्य (अहिंसा शांति धैर्य) एवं नकारात्मक मूल्य (हिंसा, अन्याय कायरता आदि)

ii) उद्देश्य के आधार पर- साध्य मूल्य (वे सभी वस्तुएं या अवस्थाएं जो स्वयं में शुभ होती हैं) एवं साधन मूल्य (जो अपने आप में शुभ ना होकर किसी अन्य वस्तुओं के साधन के रूप में शुभ होता है।

iii) विषय क्षेत्र के आधार पर - सामाजिक मूल्य (अधिकार, कर्तव्य, न्याय आदि), मानव मूल्य (जैसे नैतिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य आदि) नैतिक मूल्य में न्याय व ईमानदारी आदि आते हैं जबकि आध्यात्मिक मूल्य में शान्ति, प्रेम, अहिंसा आदि। भौतिक मूल्य में भोजन, मकान, वस्त्र आदि सौंदर्यात्मक मूल्य- प्रकृति, कला एवं मानवीय जीवन का सौन्दर्य, मनोवैज्ञानिक मूल्य- प्रेम व दया आदि।

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

iv) कार्यक्षेत्र के आधार पर- राजनीतिक मूल्य (ईमानदारी सेवा भाव आदि), न्यायिक मूल्य (सत्य निष्ठा निष्पक्षता आदि) एवं व्यवसायिक मूल्य (जवाबदेही, जिम्मेदारी, सत्यनिष्ठा आदि) [4]

यहाँ नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विस्तृत वर्णन किया जा रहा है। नैतिक मूल्यों का सम्बन्ध "स्व" से है। यहाँ "स्व" का अर्थ बुद्धि तथा भावना से है जो संयुक्त रूप से आत्मा के अर्थ में समझा जाता है। नैतिक मूल्य एक से अधिक होता है जिन्हें समग्र रूप से मूल्य तन्त्र के रूप में भी समझा जा सकता है। मूल्य तन्त्र व्यवस्था मानव अस्तित्व के विभिन्न स्तरों या आयामों के साथ व्यक्ति के अनुकूलन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण प्रोत्साहन करके उनका मार्गदर्शन करते हैं। मूल्य व्यवस्था या मूल्य तन्त्र में किन्हीं दो मूल्यों के बीच सापेक्ष सम्बन्ध होता है। जैसे किन्ही दो व्यक्तियों के लिए 'ईमानदारी' एवं 'सफलता' के बीच की सोच ठीक विपरीत हो सकती है। जबकि एक व्यक्ति के लिए 'ईमानदारी' और 'सफलता' के मुकाबले के बीच सापेक्ष सम्बन्ध होता है।

आध्यात्मिक मूल्यों [5] में विस्तृत रूप से सुविचार, प्रार्थना, ज्ञान, कर्म, धर्म, साधना तथा पुनर्जन्म जैसी अवधारणाओं को शामिल किया जाता है। समस्त धर्म आध्यात्मिक मूल्यों को सर्वोच्च महत्व देते हैं। हिन्दू धर्म के आध्यात्मिक मूल्य में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष प्रधान हैं। इनमें से अर्थ तथा काम सांसारिक मूल्य है जबकि धर्म तथा मोक्ष मुख्य आध्यात्मिक मूल्य हैं। इनमें से भी धर्म का स्थान सर्वप्रथम है। धर्म अर्थ तथा काम दोनों का प्रेरक है। जीवन के हिन्दू दृष्टिकोण के अनुसार सात्विक सर्वाधिक उच्च आदर्श है। इसके पश्चात तामसिक तथा राजसी का स्थान आता है। इसी तरह अन्य धर्मों के भी अपने-अपने दृष्टिकोण है।

मानवीय मूल्यों को व्यवहारिक उदाहरणों के साथ-साथ उच्च नैतिक सिद्धान्तों के रूप में भी समझा जाता है। मानवीय मूल्य व्यक्ति के जीवन के विचार एवं नियम है जिनका औचित्य व्यावहारिक एवं नैतिक सिद्धान्तों से सिद्ध भी किया जा सकता है। मानवीय मूल्यों का सम्बन्ध विभिन्न संस्कृतियों, विशिष्ट स्थितियों तथा परिस्थितियों से है। मानवीय मूल्य संस्कृति, परम्परा व प्रशिक्षण ही मूल्य व्यवस्थाओं का सृजन करते हैं।

आधारभूत मानवीय मूल्य- आधारभूत मालवीय मूल्य वे हैं जिनके प्रति आम लोग समान रूप से आस्था प्रकट करते हैं। इनमें मुख्यतः सत्यता, प्रेम और सेवा भावना, शान्ति, अहिंसा व न्याय हैं। इन्हें संक्षिप्त रूप में निम्न प्रकार समझा जा सकता है।

1. **सत्यता**- सत्यता या सत्य एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है। यह मानव मन में अन्तर्निहित होता है। सत्य बोलने से बोलने वाले को मानसिक एवं बौद्धिक सन्तुष्टि मिलती है। किसी तथ्य की सत्यता व्यक्ति विशेष की इच्छा या आकांक्षा पर निर्भर नहीं करती। सत्यता का अस्तित्व इच्छाओं, हितों एवं

© Shodh Patra

विचारों से स्वतन्त्र होता है। केवल सत्य के अस्तित्व का ही नहीं बल्कि सत्य के ज्ञान का भी साध्य मूल्य होता है। कहा जा सकता है कि सत्य एक साध्य मूल्य है।

2. **प्रेम और सेवा भावना**- मानवीय मूल्यों में प्रेम का अर्थ ऐसी पवित्र भावना को परिलक्षित करता है जिसमें काम विषयक भावना तनिक भी ना हो। मानवीय मूल्यों में 'प्रेम' से अभिप्राय स्नेह रखना, ध्यान रखना तथा किसी अन्य व्यक्ति की सहायता से है। यह एक मौलिक भाव है जो दूसरों के प्रति आदर तथा सेवा भावना को व्यक्त करता है। इसके अन्तर्गत दूसरे व्यक्ति, परिवार, समाज, एवं राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ प्रेम को शामिल किया जाता है। प्रेम में स्वार्थ भावना एवं जीवन में गुणवत्ता के बीच विपरीत सम्बन्ध है। प्रेम को क्षमा, परोपकार आदि अर्थों में भी समझा जा सकता है। यह मनुष्य की आत्मा की अद्भुत विशिष्टता है और सार्वभौमिक सत्य भी है। इसे मानव चेतना के स्तर पर समझा जा सकता है।

3. **शान्ति**- शान्ति का अर्थ समरसता, द्वेष तथा संघर्ष के अभाव से है। शान्ति एक भावात्मक मूल्य है जो सर्वदेशिक एवं सर्वकालिक है। चाहे व्यक्तिगत जीवन हो, समाज या कोई राष्ट्र या विश्व के स्तर पर, समस्त भावनात्मक मान्य मूल्य के समय मिलन से ही शान्ति की सम्भावना हो पाती है। शान्ति के लिए सत्य,न्याय, प्रेम और भाईचारे की भावना आवश्यक है। शान्ति के भाव में हितों का संघर्ष शुरू हो जाता है। शान्ति के विपरीत युद्ध, हिंसा, उपद्रव तथा दुराचार की स्थिति उत्पन्न होती है। शान्ति के मूर्त रूप को समझना कठिन नहीं है क्योंकि व्यक्ति इसे एक दूसरे के प्रति आदर, सहिष्णुता, मित्र भाव और शांति के रूप में महसूस करते हैं। शान्ति एक व्यक्तिगत अनुभव है परन्तु समाज के सन्दर्भ में शान्ति की स्थापना केवल सकारात्मक कार्यों से ही सम्भव है। शान्ति के लिए हिस्सक व विध्वंसक कार्यों का नहीं बल्कि रचनात्मक एवं सहिष्णुतापूर्ण कार्यों का योगदान होता है।

4. **अहिंसा**- अहिंसा एक मानवीय प्रवृत्ति है जिसका अर्थ हिंसा न करने से लगाया जाता है। सत्य की सिद्धि अहिंसा के बिना सम्भव है इसीलिए अहिंसा का महत्वपूर्ण स्थान है। अहिंसा में व्यक्ति प्रत्येक प्राणी एवं जीव जन्तु को हानि पहुँचाने से सुरक्षित करने की चेष्टा करता है। अहिंसा में क्रोध पर विजय प्राप्त करना और किसी को भी किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाना शामिल है। यह प्रवृत्ति अनैतिक कार्य करने तथा प्रकृति में सन्तुलन बनाने से भी रोकती है जैसे पर्यावरण व पारिस्थितिक तन्त्र का शोषण तथा प्रदूषण से रक्षा करना। अहिंसा आदर्शवादिता नहीं है इसे कोई भी व्यक्ति अपना सकता है। हिन्दू धर्म तथा गाँधी दर्शन में अहिंसा की स्पष्ट व्याख्या की गई है। अहिंसा के आधार पर आदर्श समाज का गठन किया जा सकता है। पशु भक्षण से कृषि की ओर, लूटपाट से

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

व्यवस्थित जीवन की ओर बढ़ना, व्यक्ति से परिवार की ओर, राष्ट्रीयता से अन्तर्राष्ट्रीय विचारों का सृजन अहिंसा का ही व्यापक रूप है।

5. **न्याय**- न्याय को उच्चतम मानवीय मूल्यों की श्रेणी में रखा जाता है। न्याय का आधार निष्पक्षता है। इसका मौलिक अर्थ है कि कानून के समक्ष समस्त व्यक्ति समान है। यह एक सामाजिक मूल्य है जो अहिंसा व स्नेह के नियमों से संचालित होता है। न्याय का मूल उद्देश्य संघर्ष को कम करना अथवा समाप्त करना है। न्याय की संकल्पना के पश्चात मनन चिंतन से ही 1948 में मानवाधिकारों की घोषणा की गई। मानवीय मूल्य होने के नाते न्याय की मेहता से सामाजिक जीवन के सभी पक्ष प्रभावित होते हैं। अत: न्याय से अभिप्राय है सभी जीवों के प्रति सम्मान में उचित व्यवहार करना। इसकी मुख्य समस्या यह है कि सामाजिक जीवन के अनितर्गत विभिन्न व्यक्तियों या समूह के प्रति वस्तुओं, सेवाओं, अवसरों, लाभों, शक्ति और सम्मान के आवंटन का उचित आधार होना चाहिए।

महापुरुषों के जीवन में मानवीय मूल्य- विश्व के महान नेताओं, प्रशंसकों, समाजसुधारकों के विचारों, नैतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक उपलब्धियाें से मानवीय मूल्यों को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। यहाँ महान नेताओं में महात्मा गाँधी, अब्राहम लिंकन, मार्टिन लूथर तथा मदर टेरेसा का नाम उल्लेखनीय है। उनके मानवीय मूल्यों में न्याय के प्रति प्रेम और लगाव, निस्वार्थता, मानव के प्रति आदर, प्रत्येक के लिए गरिमा, स्नेहिल और यथोचित व्यवहार, अहिंसा और शान्ति के प्रति आस्था, परोपकारिता, करुणा व सहानुभूति आदि हैं। महान प्रशंसकों में वर्गीज कुरियन, एम० एस० स्वामीनाथन, सैम पित्रोदा, ई० श्रीधरन, सी० डी० देशमुख, आई० जी० पटेल वी० पी० मेनन आदि नाम मुख्य है। इन्होंने व्यावसायिक एवं मानवीय मूल्यों की सूची प्रस्तुत की। यह इन प्रशंसकों के लिए मार्गदर्शन साबित हुए। सत्य निष्ठा, भेदभाव का विरोध, अनुशासन, एक नागरिक के रूप में कर्तव्यपरायणता, सामाजिक समानता, कानून के प्रति सम्मान, नैतिक जवाबदेयता, कानून बौध, साहस, आदर और भाईचारा आदि हैं।

महान समाज सुधारकों के जीवन की उपलब्धियों से भी मानवीय मूल्यों पर प्रकाश पड़ता है। इनमें कबीरदास, गुरुनानक देव, राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर, स्वामी विवेकानन्द आदि हैं। इन सभी के मानवीय मूल्यों में मानवता के प्रति आदर, प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा का ध्यान, मानवतावाद, तर्क और अन्वेषण के सहारे सत्य की खोज, दयालुता और करुणा, आत्म सन्तोष, सामाजिक समानता आदि हैं।

मानवीय मूल्यों के आत्मसातीकरण में परिवार, समाज, शिक्षण संस्थाओं का विशेष महत्व होता है। देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार, समाज एवं शिक्षण संस्थानों से मूल्यों को ग्रहण करें जिससे वह एक आदर्श नागरिक बन सके।[6]

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

मानवीय मूल्यों का लोप- वर्तमान समय में समस्त समाजों में युद्ध, हिंसा, घृणा एवं अपराध का चारों तरफ वर्चस्व दिखाई पड़ रहा है। इसलिए मानवीय मूल्यों की सार्वभौमिकता जैसी कोई बात नहीं रह गई है परन्तु मानवीय मूल्यों की परम्परा आदिम समाजों एवं धर्मों में आज भी देखी जा सकती। वहाँ मूल्यों की यह परम्परा तदन्तर जारी भी है। व्यापक उपभोगवादी संस्कृति तथा भोग विलास से पोषित भौतिकवादी युग ने आध्यात्मिक चेतना पर पर्दा डाल दिया है। धन अर्जन, सत्ता तथा प्रसिद्धि की लालसा ने परम सुखवादी जीवनयापन को बल दिया है। इस युग का प्रमुख लक्षण मानव व्यवहार की लौकिकता, व्यवहार कौशल, बुद्धि सम्पन्नता तथा प्रत्यक्षवाद रह गये हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवनयापन की दौड़ लगी हुई है। व्यक्ति ऊँची आय व नौकरी का मार्ग प्रशस्त करने के नए-नए तरीके ढूँढ रहे हैं। इन्हीं परिस्थितियों के चलते मानवीय नैतिक मूल्यों का विघटन होता जा रहा है। मानवीय मूल्यों का अर्थ किसी धर्म विशेष की शिक्षा से नहीं है। कुछ ऐसे शाश्वत नैतिक मूल्य है जो सभी धर्मों को मान्य होते हैं और जो कभी पुराने नहीं पड़ते तथा स्वस्थ समाज के लिए महत्वपूर्ण भी होते हैं।

यद्यपि यह सत्य है कि शिक्षा ने व्यक्तियों को सभ्य में बनाया है और रोजगार की तलाश पूरी की है परन्तु साथ ही यह भी सत्य है कि मनुष्य आज मशीन की भाँति तीव्र गति से कार्य कर रहे हैं पर मनुष्यता कहीं पीछे छूट गई है। आज भौतिक समृद्धि तो है परन्तु समाज से संस्कृति, मूल्य, आपसी सम्बन्ध तथा जड़ें खोखली होती जा रही हैं। परिवर्तित समाज में विघटित नैतिक मूल्यों के लिए पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। इसके साथ-साथ टी० वी० फैशन शो, उन्मुक्त सामाजिक जीवन, क्लब संस्कृति और पाश्चात्य जीवन शैली आदि को भी दोष दिया जाता रहा है। वर्तमान में जो अनावश्यक कृत्य में लिप्त होना, झूठ बोलना आदि कृत्यों को दशकों पूर्व वर्जित माना जाता था परन्तु अब युवा बिना किसी अवरोध के इन सबमें शामिल हो रहे हैं। माता-पिता अत्यधिक व्यस्त हो गए हैं जिससे वे अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय नहीं बिता पा रहे हैं। इन कारणों से आज के युवा अपने माता-पिता को शिक्षा के साथ ही विवाह जैसे महत्वपूर्ण निर्णयों में कोई अधिकार नहीं दे रहे हैं। आध्यात्मिकता तो दूर की बात है यदि कुछ युवा अध्यात्म में रुचि लेते हैं तो परिवार, समाज, रिश्तेदार तथा मित्रों के दबाव में आकर लेते हैं स्वैच्छिक नहीं।

वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों की अत्यधिक प्रासंगिकता[7] है क्योंकि वर्तमान पीढ़ी पश्चिमीकरण का अन्धानुकरण करते हुए अपनी मूल संस्कृति को अपनाने से गुरेज कर रही है जबकि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का विश्व में सर्वोच्च स्थान रहा है। अधिकतर व्यक्तियों में आज सकारात्मक के स्थान पर नकारात्मक सोच निर्मित हो रही है। मूल्य आधारित शिक्षा के माध्यम से युवाओं को अपने देश के गौरवपूर्ण

© Shodh Patra

SHODH PATRA
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
ISSN : 3048-7196, Impact Factor 6.3
Vol. 2, No. 1, Year 2025
Available online : https://shodhpatra.in/

अतीत के बारे में बताया जा सकता है। इससे युवा विभाजनकारी शक्तियों से दूर रहेंगे और आदर्श नागरिक बन सकेंगे। ऐसे में यदि मूल्य आधारित वातावरण से भावी नागरिक तैयार होंगे तो उनकी सोच में भी परिवर्तन आएगा जो आधुनिक भारत के निर्माण में अत्यन्त सहयोग प्रदान करेगा और भारत को विश्व में एक नए शिखर तक पहुँचाने में सक्षम होगा। यह उपयुक्त समय है जब मानवीय मूल्यों विशेषकर नैतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित कर दिया जाए ताकि सुसंस्कृत, सुसभ्य एवं विकसित भारत का निर्माण हो सके।

निष्कर्ष :

विकसित भारत की कल्पना केवल आर्थिक या तकनीकी उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें नागरिकों के नैतिक और मानवीय मूल्यों से युक्त व्यक्तित्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह शोध स्पष्ट करता है कि सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, दया, और समानता जैसे मानवीय मूल्य न केवल समाज में सामंजस्य बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, बल्कि ये एक संतुलित और संवेदनशील नागरिक के निर्माण में भी मूलभूत भूमिका निभाते हैं। जब व्यक्ति अपने जीवन में इन मूल्यों को आत्मसात करता है, तो वह न केवल अपने व्यक्तिगत विकास की ओर अग्रसर होता है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी सक्रिय भागीदार बनता है।

आज के बदलते सामाजिक और तकनीकी परिवेश में जहाँ भौतिकता और प्रतिस्पर्धा का वर्चस्व है, वहाँ मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि भारत को सच्चे अर्थों में विकसित राष्ट्र बनाना है, तो शिक्षा, परिवार, और समाज में इन मूल्यों का सशक्त संप्रेषण आवश्यक है। व्यक्तित्व विकास और मानवीय मूल्य एक-दूसरे के पूरक हैं, और इन्हें संतुलित रूप से अपनाकर ही एक सशक्त, संवेदनशील और नैतिक भारत की नींव रखी जा सकती है।

सन्दर्भ-

1. 1951अमेरिकी शैक्षिक नीति आयोग, पृष्ठ संख्या 68।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986।
3. रेडडी वी० एन०- "एजुकेशन एण्ड वैल्यूज" पृष्ठ संख्या 74।
4. एचटीटीपीएस://डब्लयू डब्लयू डब्लयू डॉट दृष्टियाज़ डॉट कॉम, पेपर 4।
5. नेगी रघुबीर- "आध्यात्मिक मूल्य" एचटीटीपीएस://रघुबीर नेगी डाॅट वर्ड प्रैस डाॅट काॅम।
6. एचटीटीपीएस:// हिंदी डॉट आइएएस बुक डॉट कॉम> मानवीय मूल्य 16 नवम्बर 2019।
7. गुरुपंच कुबेर सिंह एवं साहू नागेश्वर प्रसाद- "मूल्य शिक्षा ", रिसर्च जनरल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसेज, वॉल्यूम नम्बर 5, इश्यू नम्बर 3, जुलाई-सितम्बर 2014, पृष्ठ संख्या 247-249।

© Shodh Patra